मृदुल हंसने वाले, तेज से चमकने वाले, सदैव लोगों का चित्त आकर्षित करने वाले, अत्यंत मधुर बांसुरी बजाने वाले बालकृष्ण आपका मैं नित्य स्मरण करता हूं, मेरा यह पूजन आप स्वीकार करें -

जन्माष्टमी पूजन प्रत्येक गृहस्थ को अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए। जन्माष्टमी पर भगवान श्रीकृष्ण का पूजन पूरे परिवार सहित सम्पन्न करना चाहिये यदि ऐसा संभव नहीं हो तो पति-पत्नी दोनों मिलकर भी यह पूजन सम्पन्न कर सकते हैं। जन्माष्टमी के लिए निर्धारित भगवान श्रीकृष्ण के विशिष्ट पूजन की सभी सामग्री एकत्र कर लें। सायं जब भी आप पूजन करना चाहें, स्नान करके पूजा कक्ष में पीला आसन बिछाकर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें। अपने सामने लकड़ी के बाजोट या चौकी के ऊपर पीला वस्त्र बिछा दें, उस पर भगवान श्रीकृष्ण का चित्र अथवा उनकी प्रतिमा स्थापित करें। यदि संभव हो तो श्रीकृष्ण का बाल स्वरूप चित्र एक झूले में स्थापित करें। श्रीकृष्ण पूजन में नैवेद्य पंसेरी, फल तथा पंचामृत आवश्यक हैं, इसके अतिरिक्त जन्माष्टमी पूजन में लड्डू का भोग भी रख सकते हैं।

पूजन विधान

सर्वप्रथम गुरुदेव का विधिवत् पूजन सम्पन्न करें। गुरु पूजन ध्यान के पश्चात् विधिवत् श्रीकृष्ण पूजन हेतु सर्वप्रथम गणपति प्रार्थना से प्रारम्भ करें।

प्रार्थना

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।

संकल्प

दाहिने हाथ में जल, अक्षत, पुष्प तथा कुंकुम लें-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भाद्रपद मासे कृष्ण पक्षे अष्टम्यामं तिथौ शुक्रवासरे अमुक गोत्रीयः (गोत्र बोलें) अमुक शर्माऽहं (अपना नाम बोलें) अद्य भगवतो कृष्णस्य प्रीत्यर्थं यथा मिलितोपचारैः पूजनं करिष्ये।

जल को भूमि पर छोड़ दें।

कलश पूजन

कलश में जल भरकर अपनी दायीं ओर स्थापित करें, उसमें वरुण देवता का आह्वान करें -

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु देव पूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।

इसके बाद *'वं वरुणाय नमः'* मंत्र बोलते हुए गन्ध, अक्षत व पुष्प को कलश में डालकर निम्न मंत्र बोलते हुए तीर्थों का आह्वान करें -

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

पवित्रीकरण

इसके बाद पंचपात्र में जल को आचमनी से बांए हाथ में लेकर, दायें हाथ से शरीर के ऊपर छिड़कते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वास्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

फिर सामने चौकी या झूले पर भगवान श्रीकृष्ण का सुन्दर विग्रह स्थापित करें तथा निम्न प्रकार षोडशोपचार पूजन करें –

ध्यान

वंशी विभूषित करान्नव नीलदा भात्,
पीताम्बरादरुण बिम्ब फलाधरोष्ठात्।
पूर्णेन्दु सुन्दर मुखादर बिम्ब नेत्रात्,
कृष्णात् परं किमपि तत्त्वमहं न जाने।।
श्रीकृष्णाय नमः ध्यानं समर्पयामि।

आसन

पुष्प लेकर किसी थाली में आसन के रूप में स्थापित कर लें और उस पर लघु श्रीकृष्ण विग्रह (धातु या प्रस्तर मूर्ति) स्थापित कर निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

श्रीकृष्णाय नमः आसनं समर्पयामि।

पाद्य

दो आचमनी जल श्रीकृष्ण विग्रह पर चढ़ा दें –

श्रीकृष्णाय नमः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्य

किसी पात्र में जल लेकर, उसमें कुंकुम तथा अक्षत मिलाकर अर्घ्य प्रदान करें –

श्रीकृष्णाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीय

आचमनी से तीन बार जल विग्रह पर चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

श्रीकृष्णाय नमः आचमनीयं समर्पयामि।

मधुपर्क

किसी पात्र में मधु, घृत, दधि मिलाकर श्रीकृष्ण विग्रह पर चढ़ाएं –

इदं मधुपर्कं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

स्नान

आचमनी से जल चढ़ाते हुए निम्न मंत्र उच्चरित करें –

श्रीकृष्णाय नमः स्नानं समर्पयामि।

दुग्ध स्नान

श्रीकृष्णाय नमः दुग्ध स्नानं समर्पयामि।

दधि स्नान

श्रीकृष्णाय नमः दधि स्नानं समर्पयामि।

घृत स्नान

श्रीकृष्णाय नमः घृत स्नानं समर्पयामि।

मधुस्नान

श्रीकृष्णाय नमः मधु स्नानं समर्पयामि।

शर्करा स्नान

श्रीकृष्णाय नमः शर्करा स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नान

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।
श्रीकृष्णाय नमः पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

इसके पश्चात् भगवान श्रीकृष्ण के विग्रह को शुद्ध जल से स्नान कराकर पौंछ लें।

इस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण को शुद्धोदक स्नान कराने के साथ-पूजन सम्पन्न होता है इसके पश्चात् निम्न प्रकार से विग्रह का पूजन सम्पन्न करें।

वस्त्र

निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए उत्तम कोटि का पीला वस्त्र तथा उत्तरीय वस्त्र भगवान को पहना दें तथा उनके स्थापन निमित्त जो आसन है, उस पर कृष्ण विग्रह स्थापित करें –

श्रीकृष्णाय नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि।

आभूषण

हार, मुकुट-मणि, कड़े आदि गहने भगवान को पहनाते हुए इस मंत्र को बोलें –

इदानीं भूषणानि श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

गन्ध

केशर, कपूर मिश्रित चन्दन लेकर भगवान श्रीकृष्ण के मस्तक पर लगावें –

इदं गन्धं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

अक्षत

हल्दी या कुंकुम से रंगे चावल विग्रह पर चढ़ाएं –

श्रीकृष्णाय नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पहार

विभिन्न प्रकार के सुगन्धित पुष्प तथा पुष्प माला विग्रह पर चढ़ाएं और निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

इदानीं पुष्पाणि श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

तुलसी दल

तुलसी दल पर चन्दन लगाकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चढ़ाएं –

इदं सचन्दनं तुलसीदलं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

धूप

निम्न मंत्र बोलते हुए धूप अर्पण करें –

इदं धूपं श्रीकृष्णाय आघ्रापयामि नमः।

दीप

श्रीकृष्ण को दीप दिखाएं –

इदं दीपं श्रीकृष्णाय दर्शयामि नमः।

नैवेद्य

स्वच्छ थाली में नैवेद्य सजाकर भगवान के सामने रखें, साथ में एक गिलास पानी भी रखें और निम्न मंत्र भी बोलें –

ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा।

उसके बाद इन मंत्रों से पांच बार आचमन करायें –

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।

फल

अनेक प्रकार के ताजे और मीठे फल थाली में सजाकर भगवान को अर्पित करें –

श्रीकृष्णाय नमः फलम् समर्पयामि।

ताम्बूल

मुख शुद्धि के लिए ताम्बूल भगवान को अर्पित करें –

एतत् ताम्बूलं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

आरती

इसके पश्चात् श्रीकृष्ण आरती सम्पन्न करें।

पुष्पांजलि

आरती के बाद फिर दोनों हाथों में पुष्प लेकर भगवान श्रीकृष्ण को अर्पित करें –

श्रीकृष्णाय नमः पुष्पांजलि समर्पयामि।

नमस्कार

दोनों हाथ जोड़ें –

श्रीकृष्णाय नमः प्रार्थना पूर्वकं नमस्कारम् समर्पयामि।

अब निम्न कृष्ण मंत्र का अपनी माला से तीन माला मंत्र जप करें –

।।ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।।

विशेषार्घ्य

आचमनी में अक्षत, पुष्प एवं कुंकुम लेकर निम्न सन्दर्भ बोलते हुए भगवान को अर्पित करें –

अनया पूजया श्रीकृष्णः परमात्मा प्रीयन्ताम्।
ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु

इस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण का पूजन सम्पन्न करें। इसके बाद अपने समस्त स्वजनों के साथ प्रसाद ग्रहण करें।